क्या अर्थ है गौण स्नान का ?

बिना स्नान के रहना शास्त्रीय दृष्टि से बड़ा दोष है परंतु कभी–कभी शारीरिक अस्वस्थता, प्रवास में रहने या पानी के अभाव के कारण स्नान करना संभव नही हो पाता। ऐसे में मुख्य स्नान के स्थान पर गौण स्नान का काफी महत्व है जो शास्त्रीय पर्याय भी है। इसके अलावा बाहर से घर आने के बाद, भोजन के पूर्व एवं भोजन के बाद, दुर्वार्ता सुनने के बाद, शोक होने के बाद, रोना–धोना करने के बाद तथा मन अस्वस्थ होने पर भी गौण स्नान करें। इस स्नान के समय चेहरा, हाथों को कोहनियों तक तथा पैरों को घुटनों तक धोकर अच्छी तरह मुंह में पानी लेकर कुल्ले करें। भोजन के पूर्व धोए गये हाथ कपड़े से नहीं पोंछने चाहिएं। उन्हें ऊर्ध्व दिशा में रखकर ऐसे ही सूखने दें। भोजन के समय किसी अन्य वस्तु का स्पर्श नहीं होना चाहिए। रेस्टोरेंट में भोजन के पहले और भोजन के बाद पानी से हाथ जरूर धोएं, फिर वॉशबेसिन पर लगे ड्रायर से हाथों को सुखा लें। लेकिन वहां टंगे टॉवल से हाथ कभी न पोछें क्योंकि उनका उपयोग अनेक लोग हाथ पोंछने के लिए करते हैं।

गौण स्नान के चार प्रकार सर्वमान्य हैं–पहला उपस्नान कटि स्नान दूसरा मंत्र स्नान तीसरा गायत्री स्नान और चौथा तीर्थ स्नान। 'उपस्नान' (कटि स्नान) में गीले वस्त्र से अंग पोंछकर उसे कमर पर लपेट लिया जाता है, फिर साफ धोया हुआ वस्त्र पहना जाता है। 'आपोहिष्ठा' मंत्र से प्रारम्भ होने वाली तीन ऋचा तथा उसके आगे छह ऋचा (कुल नौ ऋचा) का पाठ 'मंत्र स्नान' कहलाता है। मंत्र स्नान संध्या करने के समय किया जाता है। गायत्री मंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से अंग पर प्रोक्षण करना 'गायत्री स्नाऩ' है। तुलसी, बिल्व, दूर्वा एवं दर्भ आदि वृक्षों द्वारा तैयार किए गए तीर्थ से पूजनीय व्यक्ति या देवमूर्ति का अंग प्रोक्षण करना 'तीर्थ स्नान' कहलाता है।

इसके अलावा शरीर पर भस्म का लेपन करना 'वायु स्नान' है। सूर्य के प्रकाश में बैठकर सर्वांग पर प्रकाश लेना 'सौर स्नान' कहलाता है विष्णु का ध्यान करना 'विष्णु स्नान' या 'मानस स्नान' कहलाता है। मानसरोवर आदि की यात्रा के समय कई दिनों तक गौण स्नान करके ही रहना पड़ता है। संध्या या अन्य नित्य विधि के लिए भी गौण स्नान चलता है किंतु नैमित्तिक व्रत, पूजा एवं श्राद्ध कर्म के लिए मुख्य स्नान करना आवश्यक है। स्नान और भोजन का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। स्नान के बिना भोजन करना शास्त्र द्वारा निषिद्ध है। भोजनोपरांत तुरंत कोई भी अनुष्ठान या पुरश्चरण नही किया जाता तथापि भोजन के 2 घंटे बाद मुख्य स्नान करके सामान्य पूजा एवं पुरश्चरण कर सकते हैं। परंतु गायत्री एवं मृत्युंजय आदि मंत्रों का महापुरश्चरण भोजन के बाद नही करना चाहिए।